



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 137]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 29, 2011/आषाढ़ 8, 1933

No. 137]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 29, 2011/ASADHA 8, 1933

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी तथा सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली 29 जून, 2011

अंतिम जाँच परिणाम

(निर्णायक समीक्षा)

विषय : चीन जन. गण के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 1-फिनायल-3-मिथाइल-5-पायराजोलोन के आयातों से संबंधित पाटनरोधी निर्णायक समीक्षा जाँच।

सं.15/5/2010-डीजीएडी: - वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975, (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

क . मामले की पृष्ठभूमि

- यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975, और यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए दिनांक 1 दिसंबर, 2004 की अधिसूचना सं. 14/11/2004-डीजीएडी के तहत मूल जाँच शुरू की थी। प्राधिकारी ने 16 नवंबर, 2005 की अधिसूचना सं. 14/11/2004-डीजीएडी के तहत चीन जन.गण. (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित 1-फिनायल-3-मिथाइल-5-पायराजोलोन (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हुए अपने अंतिम जाँच

परिणाम जारी किए थे और भारत सरकार द्वारा निश्चयात्मक शुल्क 10 जनवरी, 2006 की सी.शु. अधिसूचना सं. 1/2006 के तहत लगाया गया था ।

2. सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम, 1995 की धारा 9 क(5) के अनुसार, लगाया गया पाटनरोधी शुल्क यदि पूर्व में समाप्त न किया जाए तो लगाए जाने की ऐसी तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाता है और प्राधिकारी के लिए इस बात की समीक्षा करना अपेक्षित होता है कि क्या शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है । इस संबंध में माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2006 की डब्ल्यू पी सं 16893 में यह निर्णय दिया है कि निर्णायक समीक्षा अनिवार्य है । अतः माननीय उच्च न्यायालय के उक्त आदेशों के अनुसरण में निर्दिश्ट प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 क (5) के अनुसार निर्णायक समीक्षा शुरू की ताकि इस बात की जांच की जा सके कि क्याशुल्क को समाप्त किए जाने से पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।
3. स्वतः जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना जारी होने के बाद मै. प्राइमा कैमिकल्स और मै. पॉलीगॉन कैमिकल्स ने संयुक्त रूप से घरेलू उद्योग की ओर से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और उसे जारी रखने का अनुरोध करते हुए विधिवत पुष्टिकृत एक आवेदन प्रस्तुत किया क्योंकि घरेलू उद्योग को संबद्ध देश द्वारा पाटन के कारण क्षति जारी है । इस अनुरोध का आधार यह था कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है । इस संबंध में याचिकाकर्ता ने प्रथमदृष्टया साक्ष्य के साथ दावा किया था और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया था ।

ख. प्रक्रिया

4. इस कार्यवाही में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:

- (i) नियम 6(2) के अनुसार जांच की स्वतः शुरूआत के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास /प्रतिनिधियों को सूचित किया ।
- (ii) प्राधिकारी ने 1 जुलाई, 2010 की स्वतः जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधियों, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, उसके पास उपलब्ध सूचना के अनुसार ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उद्योग को भेजी । इस जांच से संबंधित पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर दायर करें और लिखित में अपने विचारों से अवगत कराएं । ज्ञात निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका के अगोपनीय रूपांतरण और प्रश्नावली की प्रतियां भी इस अनुरोध के साथ ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित संबद्ध देश के दूतावास को भेजी गई थीं कि वे संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें ।

(iii) उपर्युक्त नियम 6 (3) के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को उपलब्ध कराई गई थी।

(iv) नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मांगने के लिए संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी गई थी :

- गोल्ड लिंक इंडस्ट्रीज कंपनी लिमिटेड
- डीनोवहरम जिस्नहटु वुक्सी इंपोर्ट एक्सपोर्ट कार्पोरेट
- जियांगशु चांगयू कैमिकल कंपनी लिमिटेड

(v) नियम 6(4) के अनुसार, आवश्यक सूचना मांगने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावली भी भेजी गई थी:

- अपैक्स डाईज एंड इंटरमीडिएट्स, अहमदाबाद
- एसोसिएटेड ड्रग कंपनी, बंगलौर
- पैडीलाइट इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुंबई
- एशियाटिक कलर्स कैम इंड लि., अहमदाबाद
- अंकुर डाईस्टफ इंडस्ट्रीज, अहमदाबाद
- जेनसंस इंटरनेशनल, मुंबई
- के रसिकलाल एंड कंपनी, मुंबई
- नीलकंठ कैमिकल्स, सूरत

(vi) संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने उपर्युक्त अधिसूचना का कोई उत्तर/अनुरोध दायर नहीं किया है।

(vii) किसी भी आयातक अथवा किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने भी कोई उत्तर/अनुरोध प्रस्तुत नहीं किया है।

(viii) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय, (डी जी सी आई एंड एस) द्वारा जांच अवधि तथा पूर्ववर्ती 3 वर्षों के लिए विभिन्न सीमाशुल्क वर्गीकरणों के अंतर्गत संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में सौदेवार आंकड़े उपलब्ध कराए गए हैं। घरेलू उद्योग ने विभिन्न सीमाशुल्क वर्गीकरणों के अंतर्गत संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात के संबंध में आई बी आई एस (गौण स्रोत) के आधार पर आयात आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। उपर्युक्त दोनों स्रोतों के आयात आंकड़ों की जांच करने पर यह पता चलता है कि आई बीआई एस स्रोत के आंकड़ों में डी जी सी आई एस स्रोत की तुलना में आयातों की आव्याधिक उच्च मात्रा दर्शायी गई है। उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने मात्रा और कीमत प्रभाव के विश्लेषण हेतु आई बी आई एस (गौण स्रोत) के आंकड़ों पर भरोसा किया है।

(ix) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।

(x) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करने और भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत निकालने के लिए सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर संभव समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा। यह नोट किया गया था कि घरेलू उद्योग ने समस्त सांविधिक लेखा बहियां रखी हैं। चूंकि भरोसा की गई सूचना लेखा बहियों से ली गई है, इसलिए प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा रखी गई लेखा बहियों से सूचना का सत्यापन किया है।

(xi) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए 18 मार्च, 2011 को सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जिसमें हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों में दिए गए तर्कों पर इस जांच परिणाम में जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है।

(xii) यह जांच 1.04.2009 से 31.3.2010 (जांच अवधि) के लिए की गई थी और क्षति विश्लेषण 2006-07, 2007-08 तथा 2008-09 की अवधि के लिए किया गया है।

(xiii) प्रधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त समस्त विचारों तथा किए गए अनुरोधों पर उस सीमा तक विचार किया है जिस सीमा तक ये वर्तमान जांच के लिए संगत हैं।

(xiv) पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी ने 21 जून, 2011 को एक प्रकटन विवरण जारी किया जिसके तहत प्राधिकारी के विचाराधीन संबद्ध जांच के आवश्यक तथ्यों का प्रकटन किया गया था।

(xv) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी। संतुष्ट होने के बाद प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता प्रदान की है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां कहीं संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था।

(xvi) जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना नहीं जुटाई है, अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज किए हैं।

(xvii) *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने उसे नियमानुसार गोपनीय ही माना है।

(xviii) इस जांच परिणाम में प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई विनिमय दर सी. शु. अधिसूचना के अनुसार 1 अम.डॉ. =48.3 भा. रु. है।

ग. प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां/विचार

5. प्रकटन विवरण पर घरेलू उद्योग को छोड़कर किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने टिप्पणियां/विचार प्रस्तुत नहीं किए हैं। घरेलू उद्योग से निम्नलिखित संगत टिप्पणियां/विचार प्राप्त हुए हैं :

क. याचिकाकर्ता ने प्रदत्त सूचना के आधार पर प्रकटन विवरण में निर्धारित क्षति रहित कीमत की समीक्षा की है। यह देखा जा सकेगा कि आय के कारण घरेलू उद्योग की भारित औसत क्षति रहित कीमत में अनुमत अन्य कच्ची सामग्री की लागत तथा अन्य आय हेतु ऋण में काफी अंतर है। उपर्युक्त को देखते हुए याचिकाकर्ताओं ने निर्दिष्ट प्राधिकारी से इन परिवर्तनों पर पुनर्विचार करने और क्षति रहित कीमत में संशोधन करने का अनुरोध किया है।

ख. याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि संशोधित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन को हिसाब में लेने के लिए पाटनरोधी शुल्क बढ़ाया जाए और उसे केवल नियम राशि के आधार पर लागू किया जाए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

6. क्षतिरहित कीमत के निर्धारण के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की गई है और प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमों के अनुरूप और डी जी ए डी की सुसंगत परंपरा के अनुसार किया गया है।

घ. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

7. मूल जांच तथा वर्तमान निर्णयिक समीक्षा जांच में शामिल उत्पाद 1-फिनायल-3-मिथाइल-5-पायराजोलोन हैं। (जिसे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) विचाराधीन उत्पाद एक अकार्बनिक रसायन अर्थात् 1-फिनायल-3-मिथाइल-5-पायराजोलोन है जिसका उपयोग एनालजिन, सोल्वेंट डाईज तथा पिगमेंट डाईज और पिगमेंट ऑरेज-13 के विनिर्माण हेतु रंजक तथा भेषज उद्योग द्वारा किया जाता है। 1-फिनायल-3-मिथाइल-5-पायराजोलोन सी.शु. टैरिफ अधिनियम के अध्याय-29 के अंतर्गत वर्गीकृत है। सी. शु. टैरिफ अधिनियम के अनुसार उत्पाद का पूर्ण वर्ण 29331920 है। संबद्ध वस्तु का 293319, 291634, 291739, 292429, 293311, 293359, 294200, 980200 जैसे अन्य सी. शु. वर्गीकरणों के अंतर्गत भी आयत किए जाने की सूचना दी गई है। तथापि, सी. शु. वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और संबद्ध जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

8. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

9. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच ऐसा कोई ज्ञात अंतर नहीं है, जिसका कीमत, उपयोग, गुणवत्ता आदि पर कोई प्रभाव पड़ सकता है। घरेलू उद्योग तथा संबद्ध देश के उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी तथा प्राथमिक उत्पादक प्रक्रिया तुलनीय है; तथापि, उत्पादक उपलब्ध सुविधाओं तथा आवश्यकताओं के आधार पर अपनी उत्पादक प्रक्रिया को युक्तिसंगत बनाते हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि वर्तमान जांच एक निर्णयिक समीक्षा जांच है इसलिए विचाराधीन उत्पाद वही रहता है जैसा कि मूल जांच में परिभाषित किया गया है। पूर्ववर्ती तथा

वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद 1-फिनायल-3-मिथाइल-5-पायराजोलोन हैं जो अध्याय-29 के उपशीर्ष 29331920 के अंतर्गत वर्गीकृत एक कार्बनिक रसायन है। विचाराधीन उत्पाद का उपयोग एनालजिन, सोल्वेंट डाईज तथा पिगमेंट डाईज और पिगमेंट ऑरेज-13 के विनिर्माण हेतु रंजक तथा भेषज उद्योग द्वारा किया जाता है। संबद्ध वस्तु का 293319, 291634, 291739, 292429, 293311, 293359, 294200, 980200 जैसे अन्य सी. शु. वर्गीकरणों के अंतर्गत भी आयात किए जाने की सूचना दी गई है। तथापि, सी. शु. वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और संबद्ध जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु तथा आयातित उत्पाद समान वस्तुएँ हैं। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद और संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। तथापि, संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के उत्पादकों/निर्यातकों की ओर से किसी उत्तर के अभाव में घरेलू उद्योग और प्राधिकारी द्वारा निर्धारित मत के विरुद्ध कोई मत नहीं है। वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के कारण विचाराधीन उत्पाद वही रहता है जैसा कि पूर्ववर्ती जांच में परिभाषित किया गया है। अतः प्राधिकारी का यह मानने का प्रस्ताव है कि ये दोनों पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तुएँ हैं।

ड. घरेलू उद्योग का आधार और क्षेत्र

11. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच स्वतः शुरू की गई है। जांच की शुरूआत के बाद घरेलू उद्योग की ओर से मै. प्राइमा कैमिकल्स और मै. ओलीगॉन कैमिकल्स द्वारा संयुक्त रूप से आवेदन दायर किया गया है।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

12. आधार और क्षेत्र के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए हैं:

- (i) पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और उसे जारी रखने की याचिका मै. प्राइमा कैमिकल्स और मै. ओलीगॉन कैमिकल्स द्वारा दायर की गई थी। ऐसा कोई अन्य घरेलू उत्पादक नहीं है जिसके पास संबद्ध वस्तु का विनिर्माण करने की क्षमता हो।
- (ii) याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग है। इस प्रकार याचिकाकर्ताओं का उत्पादन "कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग" बनता है और वह पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" है।

निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार से घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत विचारों के प्रतिकूल कोई अनुरोध प्राप्त नहीं हुआ है। प्राधिकारी ने संबंधित प्रशासनिक विभाग से देश में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों/उत्पादन के बारे में विस्तृत सूचना सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास भी किए थे। तथापि, प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई थी। उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए तथा नियमों और रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि मै. प्राइमा कैमिकल्स और पॉलीगॉन कैमिकल्स नियमों के अर्थ के भीतर वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग हैं।

व. पाटन का निर्धारण

व. 1. सामान्य मूल्य का निर्धारण

घरेलू उद्योग के अनुरोध

14. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

i) चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश होने के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित करना अपेक्षित होता है। इन नियमों के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित में से किसी एक आधार पर किया जा सकता है:

- (क) बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में कीमत,
- (ख) बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में परिकलित मूल्य,
- (ग) ऐसे किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देश के लिए कीमत
- (घ) उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए समायोजित भारत में वास्तव में भुगतान की गई कीमत।
- (ङ) उचित लाभ मार्जिन शामिल करने हेतु समायोजित भारत में वास्तव में भुगतान की जाने वाली कीमत

- ii) उपर्युक्त के मद्देनजर याचिकाकर्ता (क) सूचना उपलब्ध नहीं है; (ख) अपनाई गई कीमत व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की कीमत होनी चाहिए; (ग) ऐसी सूचना के लिए ऐसे तीसरे देश के किसी उत्पादक की ओर से संहयोग भी अपेक्षित होता है, कारणों से ऐसे तीसरे देशों से अन्य देशों के लिए कीमत पर विचार नहीं कर सकता है।
- iii) भारत चीन के उत्पादकों के लिए एक उचित प्रतिनिधि देश है। न केवल भारत को प्रतिनिधि देश मानने से सही और पर्याप्त सूचना की प्राप्ति होगी, अपितु इस बात पर विचार करने का कोई वास्तविक आधार नहीं है कि भारत उचित प्रतिनिधि देश नहीं होगा। भारत को अन्य जांचकर्ता प्राधिकारियों ने भी उचित प्रतिनिधि देश माना है।
- iv) चूंकि चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण उपर्युक्त आधार में से किसी एक के आधार पर किया जा सकता है इसलिए चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण (क) भारत में कीमत, और (ख) बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा लाभ सहित विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर किया जा सकता है। अतः याचिकाकर्ता ने घरेलू उद्योग के लिए उपलब्ध सूचना के आधार पर संबद्ध वस्तु हेतु परिकलित सामान्य मूल्य का दावा किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

15. संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है और वर्तमान जांच का उत्तर नहीं दिया है। इसके अलावा, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने नियमों में यथापरिभाषित कोई अन्य वैकल्पिक आधार उपलब्ध नहीं कराया है जिसके अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया जा सके। इसके अलावा, प्राधिकारी ने वर्ल्ड ट्रेड एटलस से संगत आंकड़े प्राप्त करने के भी प्रयास किए लेकिन संबद्ध देश में संबद्ध वस्तु की घरेलू कीमत के बारे में सूचना प्राप्त नहीं की जा सकी। उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए और चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हुए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 में निहित प्रावधान के अनुसार अन्य तरीकों के बारे में रिकॉर्ड में पर्याप्त सूचना न होने के कारण प्राधिकारी ने "किसी अन्य उचित आधार" की पद्धति अपनाकर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। अतः प्राधिकारी ने प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार करते हुए और बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय सहित विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर चीन जन.गण. हेतु सामान्य मूल्य परिकलित किया है। तदनुसार चीन के निर्यातकों के लिए परिकलित सामान्य मूल्य *** अम. डा. प्रति किग्रा. निर्धारित किया गया है।

च.2. निर्यात कीमत

16. निर्यात कीमत के संबंध में प्राधिकारी ने यह पाया कि संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है। अतः प्राधिकारी ने आई पी आई एस के आयात आंकड़ों के अनुसार भारित औसत सी आई एफ कीमत पर विचार किया है क्योंकि इनमें डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों की तुलना में आयातों की पर्याप्ततः अधिक मात्रा की सूचना दी गई है। जांच अवधि के लिए आई बी आई एस आंकड़ों के अनुसार चीन से आयातों की भारित औसत सी आई एफ कीमत *** अम.डॉ. प्रति कि. ग्रा. बनती है। संबद्ध देश के उत्पादकों/निर्यातकों से उत्तर न मिलने की स्थिति में निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए *** अम. डॉ. की राशि के निम्नलिखित समायोजन किए गए हैं: -

- (क) समुद्री भाड़ा *** अम. डॉ. प्रति मी. ट. की दर से
- (ख) समुद्री बीमा सी आई एफ मूल्य के ***% की दर से
- (ग) कमीशन एफ ओ बी मूल्य के ***% की दर से
- (घ) पत्तन व्यय एफ ओ बी मूल्य के ***% की दर से
- (ङ) अंतरदेशीय भाड़ा एफ ओ बी मूल्य के ***% की दर से
- (च) बैंक कमीशन एफ ओ बी मूल्य के ***% की दर से
- (छ) चीन में वैट एफ ओ बी मूल्य के ***% की दर से

उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी ने चीन जन.गण. से हुए निर्यातों की निवल कारखाना निर्यात कीमत *** रुपए प्रति कि.ग्रा. (*** अम. डॉ./किग्रा.) निर्धारित की है।

च.3. पाटन मार्जिन

17. कारखाना स्तर पर परिकलित सामान्य मूल्य की तुलना पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु निवल कारखाना निर्यात कीमत के साथ की गई है जो निम्नानुसार बनती है :

विवरण	इकाई	सी एन वी आधार पर
सामान्य मूल्य	अम.डा. / किग्रा.	***
निवल निर्यात कीमत	अम.डा. / किग्रा.	***
पाटन मार्जिन राशि अम.डा.	अम.डा. / किग्रा.	***
पाटन मार्जिन	%	***
पाटन मार्जिन	% रेंज	20-30

18. संबद्ध देश से पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु काफी ज्यादा भी है ।

छ. चीन से पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

घरेलू उद्योग के अनुरोध

19. चीन से पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

(क) वर्तमान मामले में चीन जन.गण. के निर्यातकों तथा उत्पादकों ने पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद भी पाटित कीमतों पर सामग्री का निर्यात जारी रखा । वर्तमान मामले में पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु काफी ज्यादा भी है । चीन जन.गण. के उत्पादकों तथा निर्यातकों द्वारा सतत पाटन किया जा रहा है और लागू शुल्क समाप्त होने की स्थिति में इसमें और अधिक वृद्धि होगी ।

(ख) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल जांच के समय पहले यह पाया था कि विचाराधीन उत्पाद का चीन से निर्यात पाटित कीमतों पर किया जा रहा है जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है । मूल जांच और वर्तमान समय में विद्यमान परिस्थितियों में कोई खास अंतर नहीं आया है ।

वस्तुतः उत्पाद का पाटित कीमतों पर निर्यात जारी है और समूची क्षति अवधि के दौरान इसका भारत को निर्यात पाटित कीमतों पर किया गया है जैसा कि वर्तमान क्षति अवधि के लिए क्षति मार्जिन की गणना से देखा जा सकता है।

एप्रिल 2007 तक आयात कीमतों में वर्ष 2008-09 के दौरान वृद्धि हुई और उसके बाद गिरावट आई। इन अनुरोधों के साथ सेलग्न तालिका में चीन से विचाराधीन उत्पाद की सी आई एफ आयात कीमत दर्शायी गई है। यह देखा जा सकेगा कि अक्टूबर-नवंबर, 2008 के दौरान आयात कीमतों में वृद्धि हुई और उसके बाद पुनः गिरावट आई। वर्तमान कीमतें वर्ष 2006-2007 में प्रचलित कीमतों के आस-पास हैं या उनसे कम हैं।

(घ) इस्टर, सॉडियम सल्फाइड और एसीलिन विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन हेतु अपेक्षित प्रमुख कच्ची सामग्रियां हैं। जहां इस्टर (एकमात्र सबसे बड़ी कच्ची सामग्री) और एसीलिन (दूसरी सबसे बड़ी कच्ची सामग्री) की कीमत में पर्याप्त वृद्धि हुई है तथापि, विचाराधीन उत्पाद की कीमत में इन प्रमुख कच्ची सामग्रियों की लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है।

(घ) विचाराधीन उत्पाद ऐसे दुर्लभ उत्पादों में से एक हैं जिसका उत्पादन और खपत मुख्यतः चीन और भारत में ही होती है। वस्तुतः विचाराधीन उत्पाद की खपत केवल भारत और चीन में होती है। इसके अलावा, चीन के उत्पादकों के पास निर्यातोन्तु शुल्क सूचियां के साथ पर्याप्त उत्पादन क्षमता है। अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग पर अत्यधिक प्रभाव का पहले की संभावना है।

(च) भारत में हुए आयातों में चीन का हिस्सा तथा भारत में खपत काफी अधिक बनी हुई है। हालांकि हाल के वर्षों में इनमें कुछ 'गिरावट' की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। प्राधिकारीकर्ता यह समझता है कि कुछ आयात शुल्क छूट स्कीम के अंतर्गत किए जा रहे हैं। चूंकि भारत सरकार ने निर्यात हेतु आयात के संबंध में पाटनरोधी शुल्क के भुगतान से छूट प्रदर्शित की है, इसलिए इन आयातों पर कोई पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं होता है और इसलिए आयाति घरेलू उद्योग की कीमतों से उसके वृद्धि की ओर आयात संस्थाएँ इसलिए घरेलू उद्योग माने गए निर्यात लाभों को ध्यान में रखने के बाद भी कीमतों से बराबरी नहीं कर सकता और इसलिए घरेलू उद्योग माने गए निर्यात आधार पर भी इस खंड को आपूर्ति करने की स्थिति में नहीं है। इस सरकार यह मांग आयातों के जारीए की जा रही है। ऐसे आयातों को छोड़कर आयात ऐसी स्थितियों में ही किए गए प्रतीत होते हैं जिनमें आयातों की पहुंच कीमत लागू पाटनरोधी शुल्क के जाइने के बाद घरेलू उद्योग की कीमत से कम है। यदि आयात आंकड़ों की जांच सौदा दर सौदा आधर पर की जाए तो इसकी तत्काल पुष्टि हो जाती है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी नोट किए गए वृद्धि की स्थिति के बारे में जांच करने के लिए विभिन्न रूपों में 20 अप्रैल 2007 की प्रातीत हुई है। यह वृद्धि की वस्तु के उत्पादकों/निर्यातकों से कोई उत्तर नहीं मिला है। तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना और अन्य उपलब्ध सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के उत्पादकों के पास पर्याप्त उत्पादन क्षमता है। जांच अवधि के दौरान भारतीय बाजार में मांग में हुई अत्यधिक वृद्धि और लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद संबद्ध वस्तु के सतत पाटन को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन में वृद्धि होने की संभावना है।

[भाग - अंक १]

प्रांग । खण्ड 1। ॥ प्रस्तुत का सम्बन्ध विषयक ॥
 21. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करत है कि यद्यपि चीन में एक मात्र कंपनी अर्थात् मै. जियांगशुयांगयू का मकाल कंपनी लिमिटेड की संबद्ध प्रस्तुत का वासिक उत्पादन क्षमता लगामा 3600 मी.ट. है तथा भारत में अन्न के गहली 8900 मी.ट. वास्तक है, गिरावति प्राधिकारी का यह मत है कि चीन जियांगयू की द्वारा लगामा के तरपासि अस्तव्या व्यवस्था की शुल्क प्राधिकारी का यह मत है कि इसलिए मौजूदा माटनसेही सुलक लगामा लिया जाना चीनी स्थिति तरफून व्यवस्था बेला से मांग से अधिक है, इसलिए मौजूदा माटनसेही सुलक लगामा लिया जाना चीनी स्थिति तरफून व्यवस्था बेला से संबद्ध वस्तु का पाटन बढ़ने और घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है कि शक्ति रुद्ध विषय मिर्गि कि

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण के लियागाजनी पौर्ण १.६ इंडियन रेस्ट्रेक्शन के प्राथमिक विभिन्न छंटे ८९

संस्कृत उद्योग के अनुरोध निवारण के लकड़ी प्रमुख शहर बिहार के गढ़वाल जिले में है।

22. क्षति और कारणात्मक सबैध के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं-
 (क) लाग पाटनरोधी शुल्क के बावजूद स्वर्वद्ध देश से आयावों की समावा अधिक बनी हो।

(ख) सबद्ध देश से आयतों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों के कहीं हो सकते हैं। अस्ति कि इससे बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत पर न्यूनकारा प्रभाव पड़ रहा है तो इसका कि इससे बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत पर न्यूनकारा प्रभाव पड़ रहा है तो इसका

(g) सबद्ध देश से पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है तो उपर्युक्त प्रस्तुति का अधिकार छोड़ दिया जाएगा।

(च) शुल्क समाप्ति के बिना अत्यधिक कीमत कटौती और पाटनरोधी शुल्क समाप्ति के लिए आवश्यक है। इसके लिए विदेशी वाहनों पर लाभ में साधनरोधी कीमत न्यूनकरण प्रभाव के कारण लाभ, निवृत्ति पर आय और नकद लाभ में वृद्धि होती है। इसके लिए शुल्क समाप्ति किए जाने की स्थिति में भारी कमी आने की संभवता है। ग्राम्यकृषि का लाभ के लिए शुल्क समाप्ति किए जाने की स्थिति में भारी कमी आने की संभवता है।

पाठ्यकारी हारा जांच

प्राधिकारी द्वारा जांच .85
 हुआ कि छोल शासनाच्चनी कि शास्त्र पृष्ठ १५७ चूर्ण शीर्ष शास्त्र कामालाम के नियाम छींटी।
 23. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा अपने अनुरोधों में प्रस्तुत विभिन्न तर्कों पर विचार किया है और
 घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने की जांच प्राधिकारी के समक्ष दिए गए अन्तर्कार्यों के प्रभावों में रखते हुए की गई है। प्राधिकारी का यह निष्कर्ष निकालने का विचार है कि सबद्ध देश से वर्तमान पाटन
 मार्जिज पश्चिमनामाप्तों अधिकारी हैं। अतः प्राधिकारी सबद्ध देश से वर्तमान कीरण प्राप्ति इन सर्वे क्षतियों के संभावित प्रहलुओं की जिम्मिति करने की कार्रवाई करने पर्युद्धीय स्थान पर्याप्ति की विस्तार स्थानिक
 यदि क्लौड्स हो तो की जिम्मेदारी करने की कार्रवाई करने हैं। वे निकाल गए छींट में क्लौड्स छींटीन्नीमनी गांग
 । उन्हें तात्पूर छींट में गांग कि जाएगा है लैंड फार्म

24. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 (क) (5) के अनुसार लगाया गया पाटनरोधी शुल्क जब तक उसे समाप्त न किया जाए, इस प्रकार से लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा : परंतु यदि किसी समीक्षा में केन्द्र सरकार का यह मत हो कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह इस प्रकार से लगाए गए शुल्क की अवधि को समय-समय पर आगे और 5 वर्ष के लिए बढ़ा सकती है और आगे की ऐसी अवधि इस प्रकार के समय विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी ।

25. उच्चांशीओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव । पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है । पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती ।

26. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुबंध-II (iv) में निम्नानुसार उल्लेख है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा ।"

27. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभाव तथा कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति एवं पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच की जा सके । तदनुसार, पाटित आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभाव की जांच निम्नानुसार की गई है ।

(क) मात्रात्मक प्रभाव:

28. पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है:

I. मांग और बाजार हिस्सा

29. प्राधिकारी ने देश में उत्पाद की मांग या प्रत्यक्ष खपत का प्रत्यक्ष निर्धारण भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री और समस्त लोतों से हुए आयातों की राशि के रूप में किया है । इस प्रकार निर्धारित मांग निम्नलिखित तालिका में देखी जा सकती है । यह देखा जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान देश में उत्पाद की मांग में वृद्धि प्रदर्शित हुई है ।

मांग	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	511	517	580	792
आयातक - संबद्ध देश	मी.ट.	116.98	217.60	119.45	106.60
आयातक - अन्य देश	मी.ट.	0.02	1.16	0.20	-
मांग	मी.ट.	628.00	735.76	699.65	898.60
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	81.37	70.27	82.90	88.14
संबद्ध देश - आयातक	%	18.63	29.57	17.07	11.86
अन्य देश - आयातक	%	0.00	0.16	0.03	-
कुल	%	100	100	100	100

30. प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में संबद्ध वस्तु की मांग में वर्ष 2008-09 में मामूली गिरावट के साथ क्षति अवधि के दौरान सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है परंतु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में पर्याप्त वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री में मांग में वृद्धि के अनुरूप तथा पाटित आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के कारण सुधार प्रदर्शित हुआ है। इसी तरह आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में भी वृद्धि हुई है।

II. आयात की मात्रा और बाजार हिस्सा

31. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
आयातक	मी.ट.				
चीन	मी.ट.				

	2005 मी.ट.	80.75	116.98	217.60	119.45	106.60
अन्य देश	114 १६८	% ०.०२	80 1.16	११६.९८ १.१६	११९.४५ ०.२०	१०६.६० १८
कुल आयात	७०.००	मी.ट. ०८		११७.०० ८००	२१८.७६ ३००	११९.६५ १०६.६०
आयातों में बाजार हिस्सा	७०.००	% ०.०२	८० १.१६	११६.९८ १.१६	११९.४५ ०.२०	१०६.६० १८
संबद्ध देश		% ९९.९८		९९.४७ ८००	९९.८३ ३००	१००.०० १००
अन्य देश	११४ १६८	% ०.०२	८० १.१६	११६.९८ १.१६	११९.४५ ०.२०	१०६.६० १८
कुल आयात		% १००.००		१००.०० ८००	१००.०० ३००	१००.०० १००

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में मामूली गिरावट आई है लेकिन उसकी मात्रा काफी अधिक बनी रही जो कुल सांग में 12% है। अन्य देशों से आयात न्यूनतम है।

इसके अन्तर्गत इन देशों की आयात की गिरावट निम्नलिखित तालिका में दर्शायी गई है। इसका अधिक विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

III. उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग
क्षमता और उत्पादन का विहंगावलोकन दिया गया है:-

विवरण	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि
क्षमता	मी.ट.	925	925	925	925
उत्पादन	मी.ट.	542	519	616	795
क्षमता उपयोग	%	58.59%	56.11%	66.59%	85.95%

[भाग I - खण्ड 1]

[प्राप्ति + खण्ड 1] 34. निम्नाधिकारी हो यह प्रकाश है कि भासि अवधि को सौमन्य पुरे लू ज्योग के उत्तमादिति और क्षमता उपयोग में कृद्धि हुई है। इसके अलावा इसी संबंध और मशीनरी का उपयोग करते अन्य जित्पदकारी घरेलू उद्योग भारा उत्तमादिति लाने का उत्त्यादन कर रहे हैं। उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि भासि अवधि के सौमन्य पुरे लू ज्योग की क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है जो

କାମକିଳ ରେ ପାଇବାର ପରିମାଣ ଯାଏ ନୀତିରେ ନୁହିଲା (୩)

IV. विक्री:

विक्री:	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	आंतर-वर्षमें
घरेलू उद्योग की विक्री मात्रा निम्नलिखित तालिका में दी गई है:-	सूचीबद्ध	2006-07	2007-08	2008-09	आंतर-वर्षमें

36. घरेलू उद्योग की विक्री मात्रा में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। लंबायिंग, घरेलू मांग को पूरा करने की क्षमता होने के बावजूद घरेलू उद्योग की विक्री उससे कम हुई है।

V. भिजासार हिस्सा

36. घरेलू उद्योग का विकास नामा ने समाज के लिए बहुत अच्छी तरफ से काम हुई है। पूरा करने की क्षमता होने के बावजूद घरेलू उद्योग की विक्री उससे कम हुई है।						
विभिन्न वित्तीय वर्षों का वित्तीय विवरण		(प्रति वर्ष)		विभिन्न वित्तीय वर्षों का वित्तीय विवरण		
विभिन्न वित्तीय वर्ष	वित्तीय वर्ष	विभिन्न वित्तीय वर्ष	वित्तीय वर्ष	विभिन्न वित्तीय वर्ष	विभिन्न वित्तीय वर्ष	विभिन्न वित्तीय वर्ष
37.	भारत में भारत में घरेलू उद्योग तथा अन्य विभिन्न पक्षकारों का हिस्सा निम्नानुसार था:	(विभिन्न वित्तीय वर्ष)	(विभिन्न वित्तीय वर्ष)	(विभिन्न वित्तीय वर्ष)	(विभिन्न वित्तीय वर्ष)	(विभिन्न वित्तीय वर्ष)
विवरण	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	
01. मांग	मी.ट.	628	736	700	899	
कम्पनियों का वित्तीय विवरण इसके लिए देखें।						
मांग में हिस्सा इस कम्पनियों का वित्तीय विवरण देखें।						
प्रियांका चौधरी नामक व्यक्ति ने नींवें वित्तीय विवरण के माध्यम से निम्नलिखित नियमों का अनुरूप वित्तीय विवरण दिया है।						
अन्य देश	%	0.00	0.16	0.03	-	
घरेलू उद्योग	%	81.37	70.27	82.90	88.14	

38. भारतीय बाजार में चीन से हुए आयातों का हिस्सा काफी अधिक बना हुआ है। यद्यपि उसमें जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। जांच अवधि के दौरान घरेलू मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में भी वृद्धि हुई है। तथापि, अपेक्षित क्षमता रखने और मौजूदा पाटनरोधी उपाय का संरक्षण प्राप्त होने के बावजूद घरेलू बाजार में समूची मांग को पूरा करने में घरेलू उद्योग अक्षम रहा है।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

39. घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के कीमत प्रभाव का पता लगाने के लिए प्राधिकारी ने इस बात की जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा गिरावट आई है अथवा होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती। कीमत कटौती की मात्रा का निर्धारण करने से पहले प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना आयातों की पहुंच कीमत के साथ की है। निवल बिक्री प्राप्ति की गणना सभी रिबेटों तथा करों को घटाने के बाद की गई थी। लागू पाटनरोधी उपाय पर विचार करने के बाद भी आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के साथ की गई है।

I. कीमत कटौती:

निवल बिक्री प्राप्ति (रु./कि ग्रा.)	पहुंच कीमत (रु. / किग्रा.)		कीमत कटौती (रु. / किग्रा.)		कीमत कटौती %		कीमत कटौती % रेज	
	(पाटन रोधी शुल्क सहित)	(पाटन रोधी शुल्क रहित)	(पाटनरोधी शुल्क रहित)	(पाटन रोधी शुल्क सहित)	(पाटन रोधी शुल्क रहित)	(पाटन रोधी शुल्क सहित)	(पाटन रोधी शुल्क रहित)	(पाटन रोधी शुल्क सहित)
***	***	***	***	***	***	***	15-20	- 5 से -10

40. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि शुल्क के बिना कीमत कटौती सकारात्मक और काफी अधिक है। तथापि, शुल्क सहित कीमत कटौती नकारात्मक है जिससे संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन पर मौजूदा पाटनरोधी उपाय के प्रभाव के महत्व का पता चलता है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में सकारात्मक कीमत कटौती हो सकती है।

II. कम कीमत पर बिक्री:

	पहुंच कीमत (रु./किग्रा.)	कम कीमत पर बिक्री (रु./किग्रा.)	कम कीमत पर बिक्री %	कम कीमत पर बिक्री की रेंज %
क्षति रहित कीमत (रु./किग्रा.)	(पाटनरोधी शुल्क रहित)	(पाटन रोधी शुल्क सहित)	(पाटनरोधी शुल्क रहित)	(पाटन रोधी शुल्क सहित))
***	***	***	***	10-20 -10 से -20

41. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क के बिना पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है।

III. पाटित आयातों का कीमत हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव:

42. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों का हास/न्यूनीकरण हो रहा था, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत तथा निवल बिक्री प्राप्ति की मत की तुलना आयातों की पहुंच कीमत के साथ की है जिसका उल्लेख निम्नलिखित तालिका में किया गया है :

विवरण	ईकाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10 (जांच अवधि)
उत्पादन की लागत	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	118	100
निवल बिक्री कीमत	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	116	102

लाभ/हानि	रु./ किंवा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	57	44	164
संबद्ध देश से पहुंच कीमत (पाठन रोधी शुल्क रहित)	रु./ किंवा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	135	97

43. उथर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत में गिरावट आई है और वह आधार वर्ष के स्तर पर बनी रही है। पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान निवल बिक्री कीमत में भी गिरावट आई है और आधार वर्ष की तुलना में मामूली वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री लागत और बिक्री कीमत पर उत्तर-चढ़ावसमान रहा है और उससे किसी कीमत हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव का पता नहीं चलता है।

क्षति के अन्य मापदंडों की जांच

44. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा आयातों की मात्रा एवं मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री के साथ-साथ विभिन्न खंडों के बाजार हिस्से के अनुरूप मांग की पद्धति जैसे प्रमुख क्षति संकेतकों की जांच करने के बाद ऐसे अन्य आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण किया गया है जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है जो निम्नानुसार है::

I. लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद प्रवाह

45. निवेश पर आय ब्याज पूर्व एवं पश्चात लाभ/हानि और नकद लाभ को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है:

विवरण	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
उत्पादन की लागत	रु./ किंवा.	***	***	***	***
बिक्री कीमत	रु./ किंवा.	***	***	***	***
लाभ/हानि	रु./ किंवा.	***	***	***	***
ब्याज पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***

नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(18)	80	271
लगाई गई पूँजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(48)	35	157

46. यह नोट किया जाता है कि उत्पादन लागत में वर्ष 2008-09 तक वृद्धि हुई और उसके बाद जांच अवधि में यह घटकर आधार वर्ष के स्तर पर आ गई। बिक्री कीमत में भी वर्ष 2008-09 में भी वृद्धि हुई और उसके बाद जांच अवधि में गिरावट आई। ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग ने पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद लाभ कमाना शुरू किया है।

II. मालसूची :

47. घरेलू उद्योग की मालसूची निम्नानुसार रही है:

	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि
औसत स्टॉक	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	86	200	293

48. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की औसत मालसूची में वृद्धि हुई है। मांग और उत्पादन में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग अपने उत्पादन का समापन करने में असमर्थ रहा है जिसके परिणामस्वरूप स्टॉक में वृद्धि हुई है।

III. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि
रोजगार	सं.	***	***	***	***

मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	रु./ मी.ट.	***	***	***	***

49. यह देखा जाता है कि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर में गिरावट आई है और वह आधार वर्ष के स्तर पर बना हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त वेतन और मजदूरी में वृद्धि हुई है। पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी मजदूरी और उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	95.75	113.69	146.84
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	86.48	93.62	146.84

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादकता का स्तर उत्पादन और रोजगार के अनुरूप रहा है।

IV. लाभप्रदता:

विवरण	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
बिक्री की लागत	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.77	117.66	100.00
बिक्री कीमत	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	96-69	115.76	101.65

लाभ/हानि	रु./ किंवा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	(57.14)	44.48	164.20
ब्याज पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	47.20	94.91	188.09
घरेलू बिक्री पर कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	(18.21)	79.13	270.90

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है और घरेलू उद्योग लाभ की स्थिति में है ।

V. वृद्धि

52. घरेलू उद्योग ने सकारात्मक वृद्धि दर्ज करनी शुरू कर दी है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन, उत्पादकता, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, नकद लाभ, लाभप्रदता और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार हुआ है । तथापि, घरेलू उद्योग की वृद्धि और उसकी स्थिति में सुधार मौजूदा पाटनरोधी उपाय के कारण हुआ है । यद्यपि, पूर्ववर्ती वर्ष और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की आयात की मात्रा में मामूली गिरावट आई है । तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू खपत में संबद्ध देश का बाजार हिस्सा अत्यधिक बना हुआ है और आयात पाटित कीमत पर हो रहे हैं । इस चरण पर पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से पाटित आयातों में वृद्धि होगी तथा घरेलू उद्योग को और अधिक क्षति होगी ।

VI. पाटन मार्जिन की मात्रा

53. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्धारित पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु काफी ज्यादा भी है ।

VII. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की भागस्वरूप फर्में बहु उत्पाद फर्में हैं । इस मामले में आगे निवेश जुटाने की उनकी क्षमता महत्वपूर्ण कारक नहीं है । तथापि, यदि वर्तमान स्रोत से पाटन जारी रहता है तो पूंजी जुटाने की घरेलू उद्योग की क्षमता प्रभावित होगी ।

झ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

55. प्राधिकारी के निर्धारण के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत की तुलना जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । इस प्रकार की तुलना से क्षति मार्जिन निम्नानुसार बनता है :

विवरण	रु./किंग्रा.
क्षति रहित कीमत (एन आई पी)	***
पहुंच कीमत (पाटनरोधी शुल्क रहित)	***
क्षति मार्जिन	***
क्षति मार्जिन (%)	***
क्षति मार्जिन (%) रेज	10-20

प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति मार्जिन न केवल सकारात्मक है अपितु, अत्यधिक भी है।

ज. क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

56. क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

(क) चीन द्वारा इन्फ्यूज पैराजोलोन के लगभग 10,000 मी.ट. से अधिक के यौगिकों का निर्यात किया जा रहा है। पैराजोलोन इस यौगिक के विनिर्माण हेतु अपेक्षित एक प्रमुख कच्ची सामग्री है। पैराजोलोन यौगिक के निर्यात से चीन में पैराजोलोन के पर्याप्त उत्पादन की स्पष्ट पुष्टि होती है।

(ख) चीन में पैराजोलोन के अत्यधिक उत्पादन की मौजूदगी से विचाराधीन उत्पाद सहित पैराजोलोन के निर्यात की संभावना की स्पष्ट पुष्टि होती है क्योंकि उत्पादक यौगिक में उक्त उत्पाद को परिवर्तित करने के बजाए बेहतर कीमत प्राप्त होने अथवा यौगिक में उसे परिवर्तित करने हेतु अन्य उपभोक्ताओं को घरेलू बाजार में बिक्री करने पर उत्पाद का निर्यात करने की स्थिति में होगे।

(ग) नियमों में निर्यातिक देश में "मुक्त रूप से निपटान योग्य उत्पादन क्षमताओं" पर विचार करने का प्रावधान है। मुक्त रूप से निपटान योग्य उत्पादन क्षमताओं को चीन के उत्पादकों के पास उपलब्ध क्षमताओं के रूप में देखना होगा जिनका उपयोग विभिन्न बाजारों में बिक्री तय करने के लिए किया जा सकता है। चीन के उत्पादकों ने ऐसा कोई दावा नहीं किया है और न ही ऐसी कोई सार्वजनिक सूचना उपलब्ध है कि पैराजोलोन की सुविधाएं कुछेक बाजारों के लिए समर्पित/सीमित हैं और ये भारतीय बाजार में भेजने के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

(घ) वर्ष 2007-08 में विचाराधीन उत्पाद की आयात मात्रा में वृद्धि (जो वर्तमान जांच अवधि में हुए आयात की मात्रा से दोगुनी है) से स्पष्टतः चीन के उत्पादकों के पास मुक्त रूप से निपटान योग्य उत्पादन क्षमता की स्पष्ट पुष्टि होती है।

(ङ) मूल जांच के अंतिम जांच परिणाम से यह भी देखा जा सकेगा कि चीन से विचाराधीन उत्पाद का आयात 20 मी.ट. (2000-2001) से बढ़कर 100 मी.ट. (2001-2002) और जांच अवधि में आगे और बढ़कर 280 मी.ट. हो गया है। इस प्रकार इस मामले में आधार वर्ष की तुलना में आयातों में इस अवधि में 14 गुना वृद्धि हुई है। इससे चीन में पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य उत्पादन क्षमताओं की मौजूदगी का पता चलता है।

(च) पूर्ववर्ती जांचों के समय जो परिस्थितियाँ मौजूद थीं, वे आज की तारीख तक उसी रूप में विद्यमान हैं। परिस्थितियों में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, जिससे यह संकेत मिल सके कि पाटन मूल जांच के समय के स्तर से अधिक स्तर पर पुनः न होने की संभावना नहीं है।

(छ) संबद्ध देश में संबद्ध वस्तु की भारी उत्पादन क्षमताओं और चीन के उत्पादकों के निर्यातोन्मुखी होने तथा भारत में संबद्ध वस्तु की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए पाटनरोधी शुल्क में कमी या समाप्ति की किसी संभावना की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले पाटित आयातों में वृद्धि होने की संभावना है।

(ज) लागू पाटनरोधी शुल्क पर विचार करने के बाद भी सकारात्मक कीमत कटौती से लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ने का संकेत मिलता है।

(झ) विभिन्न आर्थिक मापदंडों में सुधार के बावजूद पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ने की संभावना है।

(ञ) चीन में उपलब्ध पर्याप्त क्षमताओं के कारण चीन के उत्पादकों द्वारा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पूर्ण घरेलू उद्योग का बाजार हड्डप लेने की संभावना है।

(ट) चीन के उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा सतत पाटन किया जा रहा है जो शुल्क समाप्त होने पर और अधिक बढ़ जाएगा जैसा कि क्षति अवधि के दौरान यांचिकाकर्ता द्वारा निकाले गए पाटन मार्जिन से स्पष्ट होता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद का आयात समग्र रूप में काफी अधिक रहा है। मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का आयात पाटित कीमतों पर जारी रहा। कीमत प्रभाव के संबंध में यह देखा गया है कि आयातों के कारण पाटनरोधी शुल्क के बिना भी घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही है और कम कीमत पर बिक्री हो रही है। यद्यपि, शुल्क के साथ कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव नकारात्मक है। यद्यपि, विभिन्न आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की समग्र आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा प्राधिकारी ने यह पाया है कि ऐसा सुधार लागू पाटनरोधी उपाय के कारण हुआ है। उपर्युक्त स्थिति को देखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन पर पाटनरोधी उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में इसमें वृद्धि होने की संभावना है जिससे घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

ट. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंधः

58. प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध की महत्ता और प्रासंगिकता के बारे में किए गए अनुरोधों की जांच की है। यह नोट करना जरूरी है कि धारा 9 (5) के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए पाटन और क्षति की संभावना और शुल्क जारी रखने की जरूरत की जांच करना अपेक्षित होता है भले ही समीक्षा जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात हुआ हो अथवा

नहीं। इस बात की जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमों में सूचीबद्ध अन्य मापदंडों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। निम्नानुसार नोट किया जाता है :

(क) अन्य देशों से मात्रा एवं कीमत

59. जांच अवधि के दौरान अन्य देश से संबद्ध वस्तु का कोई आयात नहीं हुआ है। क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों से संबद्ध वस्तु का आयात अत्यंत नगण्य है और इसलिए इसका घरेलू उद्योग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता है।

(ख) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

60. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है। इसके अलावा, जांच अवधि में आयात की पहुंच कीमत में भारी गिरावट आई है। ऐसी स्थिति में जब आयात कीमतें भारतीय उत्पादकों की बिक्री कीमत से काफी कम हैं, यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि बाजार में कीमत में कमी घरेलू उत्पादकों द्वारा की गई थी।

(ग) मांग में कमी अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

61. विचाराधीन अवधि के दौरान मांग में कोई कमी नहीं आई है। इसके बजाए क्षति अवधि में घरेलू मांग में लगातार वृद्धि हुई है। अतः मांग में कोई संभावित कमी ऐसे कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। हितबद्ध पक्षकारों ने खपत की पद्धति में परिवर्तन के बारे में कोई तर्क नहीं दिया है और न ही यह प्रतीत होता है कि खपत की पद्धति में परिवर्तन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

(घ) प्रौद्योगिकी विकासः

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा असहयोग किए जाने के कारण प्रौद्योगिकी में किसी अंतर का निर्धारण नहीं किया जा सकता। तथापि, प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई विकास नहीं हुआ है जिससे संबद्ध देश के उत्पादकों/निर्यातकों की तुलना में घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रभाव पड़ सकता है।

(ङ) निर्यात निष्पादनः

63. घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु का निर्यात नगण्य है। तथापि, क्षति विश्लेषण घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन को शामिल किए बिना किया गया है।

ठ. भारती उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

64. प्राधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्भूत उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं। तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का हास रुकेगा और संबद्ध

वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता अभी भी दो या अधिक आपूत्रि के स्रोत रख सकते हैं।

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयातों पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगेगा; और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तु की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ड. निष्कर्ष:

66. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए अनुरोधों तथा उपर्युक्त जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और पाटन तथा परिणामी क्षति जारी रहने और पाटन तथा क्षति जारी रहने/उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- i. संबद्ध वस्तु संबद्ध देश से पाटित कीमत पर भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही है और पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक तथा काफी ज्यादा है।
- ii. मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात पाटित कीमतों पर जारी है।
- iii. यद्यपि, मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के कारण घरेलू उद्योग के समग्र आर्थिक मापदंडों और स्थिति में सुधार हुआ है तथापि, मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बिना संबद्ध देश से कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री काफी अधिक है। अतः वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।
- iv. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद का आयात समग्र रूप में काफी अधिक रहा है। मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का आयात पाटित कीमतों पर जारी रहा। कीमत प्रभाव के संबंध में यह देखा गया है कि आयातों के कारण पाटनरोधी शुल्क के बिना भी घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही है और कम कीमत पर बिक्री हो रही है। यद्यपि, शुल्क के साथ कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव नकारात्मक है। यद्यपि, विभिन्न आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की समग्र आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा प्राधिकारी ने यह पाया है कि ऐसा सुधार लागू पाटनरोधी उपाय के कारण हुआ है। उपर्युक्त स्थिति को देखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन पर पाटनरोधी उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में इसमें वृद्धि होने की संभावना है जिससे घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- v. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि चीन की एकमात्र कंपनी अर्थात् मै. जियांगशु चांगयू कैमिकल कंपनी लिमिटेड की संबद्ध वस्तु की

लगभग 3600 मी.ट./वार्षिक की उत्पादन क्षमता है तथापि, भारत में मांग केवल 898 मी.ट. वार्षिक है। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि चूंकि चीन जन.गण. में केवल एक कंपनी की क्षमता भारत में कुल मांग से काफी अधिक है इसलिए मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन में वृद्धि होगी और घरेलू उद्योग को क्षति होगी।

vi. प्राधिकारी इस तथ्य को भी नोट करते हैं कि किसी भी उत्पादक/निर्यातक/आयातक ने संबद्ध जांच का ऐसा कोई उत्तर नहीं दिया है जिससे यह पता चले कि वे जांच में जानबूझकर भाग नहीं ले रहे हैं और भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन कर रहे हैं।

८. सिफारिशें

67. उपर्युक्तानुसार निष्कर्ष निकालने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि पाटनरोधी उपाय की अवधि को बढ़ाना और पाटनरोधी शुल्क की राशि में संशोधन करना और उसे निम्नलिखित शुल्क तालिका में किए गए उल्लेखानुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर लागू करना अपेक्षित है।

68. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराकर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा ये सिफारिशें स्वीकार किए जाने की स्थिति में निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में उल्लिखित राशि के अनुसार पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	शीर्ष/उपशीर्ष	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	293319, 291634, 291739, 292429, 293311, 293359, 294200, 980200	1-फिनायल-3- मिथाइल-5- पायराजोलोन	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	0.52	कि. ग्रा.	अम.डॉ.
2	-वही-	1-फिनायल-3- मिथाइल-5- पायराजोलोन	चीन जन.गण.	कोई	कोई	कोई	0.52	कि. ग्रा.	अम.डॉ.
3	-वही-	1-फिनायल-3- मिथाइल-5- पायराजोलोन	चीन जन.गण. से इतर अन्य कोई देश	चीन जन.गण.	कोई	कोई	0.52	कि. ग्रा.	अम.डॉ.

ण. आगे की प्रक्रिया

69. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क प्राधिकारी द्वारा यथा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3 क, 8 1, 9 तथा 9 के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

70. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार, सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th June, 2011

FINAL FINDINGS

(SUNSET REVIEW)

Subject: Anti Dumping Sunset Review Investigations concerning imports of 1-Phenyl-3-Methyl-5-Pyrazolone originating in or exported from China PR.

F. No. 15/5/2010-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and thereafter (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended, (hereinafter referred to as the Rules) thereof;

A. BACKGROUND OF THE CASE

- Whereas the Designated Authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and thereafter and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended, initiated the original investigation vide Notification No. 14/11/2004-DGAD dated 1st December, 2004. The Authority issued its Final findings recommending imposition of definitive anti-dumping duty on imports of 1-Phenyl-3-Methyl-5-Pyrazolone (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred as subject country), vide Notification No. 14/11/2004-DGAD - dated 16th November, 2005 and definitive duty was imposed by the Govt. of India vide Customs Notification No. 1/2006 dated 10th January 2006.
- WHEREAS in terms of Section 9A(5) of the Customs Tariff (Amendment) Act 1995 the anti-dumping duties imposed, shall unless revoked earlier, cease to have effect on expiry of five years from the date of such imposition and the Authority is required to review, whether the expiry of the duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping

and injury. In this regard, Hon'ble Delhi High Court in WP No 16893 of 2006 held that sunset review is mandatory. Therefore, pursuant to the above orders of the Hon'ble High Court, the Designated Authority had initiated sunset review in accordance with Section 9A(5) of the Act read with Rule 23 of Anti-dumping Rules to examine whether cessation of the duty would lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

3. After suo-moto initiation of the investigation, M/s Prima Chemicals and M/s Polygon Chemicals, jointly submitted a duly substantiated application on behalf of domestic industry requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods from subject country as the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject country. The request was based on the grounds that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The petitioner had claimed with *prima facie* evidence in this regard and had requested for the imposition of the anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country.

B. **PROCEDURE**

4. In these proceedings the procedure described below has been followed:
 - (i) The Embassy/Representatives of the subject country in New Delhi were informed about the suo-moto initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2).
 - (ii) The Authority sent copy of the suo-moto initiation notification dated 1st July, 2010 to the Embassy/Representatives of the subject country in India, known exporters from the subject country, known importers and other interested parties, and the domestic industry, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file questionnaire responses and make their views known in writing within prescribed time limit. Copies of the letter, non-confidential version of the petition and questionnaire sent to the known exporters were also sent to the Embassy of subject country along with a list of known exporters/ producers with request to advise the exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
 - (iii) Copy of the non-confidential version of the petition filed by the domestic industry was made available to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rules 6(3) supra.
 - (iv) Questionnaires were sent to the following known exporters from subject country in accordance with the rule 6(4) to elicit relevant information:
 - Goldlink Industries Co. Ltd.,
 - Dinovhrm Jishndhu Wuxi Import Export Corporation,
 - Jiangsu Changyu Chemical Co., Ltd.

(v) Questionnaire was also sent to the following known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):

- Apex Dyes & Intermediates, Ahmedabad
- Associated Drug Co, Bangalore
- Pedilite Industries Ltd, Bombay,
- Asiatic. Colours Chem Ind. Ltd, Ahmedabad
- Ankur Dystuff Industries, Ahmedabad
- Jansons International, Mumbai
- K Rasiklal & Co, Mumbai
- Nilkantha Chemicals, Surat

(vi) No response/submission has been submitted by any of the exporters/producers of the subject goods from the subject country to the above notification.

(vii) No response/submission has also been submitted by any of the importers or any other interested parties.

(viii) Transaction-wise data in respect of the imports of subject goods under various customs classifications for the period of investigation and preceding three years has been provided by Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S). Domestic Industry has furnished data based on IBIS (Secondary Source) in respect of imports of the subject goods from the subject country under various custom classifications. On examination of the import data from both the above stated sources, it shows that the data from IBIS source shows substantially higher volume of imports than the DGCIS source. In view of the above position, the Authority has relied upon IBIS (secondary source) data for volume as well as price effect analysis.

(ix) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

(x) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to domestic industry. It was noted that the firms has maintained all statutory books of accounts. Since information relied upon is from the books of accounts, the Authority has adopted the information verified from the books of accounts maintained by the applicants.

(xi) The Authority held a public hearing on 18th March, 2011 to hear the interested parties orally, which was attended by the representatives of the interested parties. The arguments raised in the written submissions/rejoinders received from interested parties have been considered, wherever found relevant, in this finding.

- (xii) Investigation was carried out for the period starting from 1.04.2009 to 31.3.2010 (POI) and the Injury analysis has been done for the period 2006-07, 2007-08 and 2008-09.
- (xiii) The Authority has considered all views expressed and submissions made by interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.
- (xiv) In accordance with Rule 16 of the anti-dumping Rules, the Authority issued a Disclosure Statement on 21st June, 2011 disclosing thereby essential facts of the subject investigation under consideration of the Authority.
- (xv) Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- (xvi) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded the findings on the basis of the facts available.
- (xvii) *** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the authority under the Rules.
- (xviii) The Exchange rate adopted by the Authority in this finding is 1USD=48.3 INR as per customs notification.

C. Comments/Views on the Disclosure Statement

5. No interested party other than Domestic Industry has furnished comments/views on the Disclosure Statement. The following relevant comments/views have been received from the Domestic Industry:

- a. The petitioner has reviewed non-injurious price determined in the disclosure statement based on the information provided. It would be seen that there is a significant difference in the weighted average non injurious price of domestic industry on account of return allowed, other raw materials costs and credit for other income. In view of the above, petitioners request the Designated Authority to kindly reconsider these changes and modify the non injurious price.
- b. Petitioner submits that the anti dumping duty may be enhanced to account for the revised dumping margin and injury margin and imposed only on fixed amount basis.

Examination by the Authority

6. The issues raised by domestic industry regarding determination of non injurious price (NIP) has been examined and the Authority notes that the NIP has been determined in line with the Anti Dumping Rules and as per the consistent practice of the DGAD.

PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'

7. The product involved in the original investigation as well as present sunset review investigation is 1-Phenyl-3-Methyl-5-Pyrazolone (also referred to as subject goods). Product under consideration is an organic chemical i.e. 1-Phenyl-3-Methyl-5-Pyrazolone, used in dyes and pharmaceutical industry for manufacturing of Analgin, Solvent Dyes and Pigment Dyes, and Pigment orange 13. 1-Phenyl-3-Methyl-5-Pyrazolone is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. Complete description of the product as per Customs Tariff Act is 29331920. The subject goods are also reportedly imported under other customs classifications Nos. such as 293319, 291634, 291739, 292429, 293311, 293359, 294200, 980200 as well.. However, the customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of the subject investigation.

Submissions made by the Interested Parties

Submissions of the domestic industry

9. The Domestic Industry has claimed that there is no known difference between the product manufactured by domestic Industry and the subject goods imported from the subject country, which can have any impact on price, usage, quality etc. Domestic Industry also claims that the technology and primary production process employed by them and the foreign producers are comparable; however, producers fine-tune their production process based on available facilities and necessities.

Examination by the Authority.

10. The Authority notes that since present investigation is a sunset review investigation, the product under consideration remains the same as has been defined in the original investigation. The product under consideration in the previous as well as present investigations is Phenyl-3-Methyl-5-Pyrazolone, an organic chemical, classified under Chapter 29 under Sub-heading 29 33 19 20. Product under consideration is used in dye and pharmaceutical industry for manufacture of Analgin, Solvent Dyes and Pigment Dyes, and Pigment orange 13. The imports of subject goods are also reported under customs classification No. 293319, 291634, 291739, 292429, 293311, 293359, 294200, 980200 as well. However the Customs classifications are indicative only and not binding on the Authority. The goods produced by the domestic industry are like article to the imported product. There is no known difference in product under consideration produced

by the Indian industry and subject goods exported from subject countries. Moreover, due to absence of any response from the producers/exporters of the subject goods from the subject country there is no view contrary to the view held by the domestic industry and the Authority. The Authority therefore proposes to hold that the two are like article as per Rule 2(d) of Anti-Dumping Rules.

E. Standing and scope of the Domestic Industry

11. The present sunset review investigation has been initiated suo-motto. After the initiation of the investigation, application has been jointly filed by M/s.Prima Chemicals and M/s Polygone Chemicals on behalf of domestic industry.

Submissions of the Domestic Industry

12. The following views have been offered by the domestic industry with regard to standing and scope:

(i) The petition for review and continuation of the anti-dumping duties was filed by M/s.Prima Chemicals and M/s Polygon Chemicals. There are no other domestic producers having capacity to manufacture the subject goods.

(ii) Production of the petitioner constitutes a major proportion of total Indian production. Thus, petitioners account for “a major proportion in total Indian production” and constitutes “domestic industry” within the meaning of the Rules.

Examination by the Designated Authority

13. Authority notes that there is no submission received from any interested party contrary to the views offered by the domestic industry. Further efforts were also made by the Authority to ascertain the detailed information with regard to domestic producers/production of the subject goods in the country from the concerned administrative department. However no information was made available to the Authority. In view of the above position and having regard to the Rules and information on record, the Authority holds that M/s Prima Chemicals and M/s Polygone Chemicals, constitute domestic industry for the purpose of the present investigations within the meaning of the Rules.

F. Dumping Determination

F.1. Determination of Normal Value

Submissions of the Domestic Industry

14. The domestic industry has made following submissions:

i) China being a non-market economy, the Designated Authority is required to determine normal value in accordance with Para 7 of Annexure-I to the Rules. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:

- (a) the price in a market economy third country,
- (b) constructed value in a market economy third country,
- (c) the price from such a third country to other country, including India.
- (d) the price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin.
- (e) the price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.

ii) In view of the above, the petitioner could not consider price from such third countries to other countries for the reasons (a) information is not available; (b) the price so adopted must be a price in the ordinary course of trade; (c) such information would also require cooperation from a producer in such third country.

iv) India is an appropriate surrogate country for Chinese producers. Not only consideration of India as a surrogate country would result in access to accurate and adequate information, there is no factual basis to consider that India would not be a proper surrogate country. India has been considered as an appropriate surrogate by other Investigating Authorities too.

v) As the normal value in China can be determined on any of the above-mentioned basis, the normal value in China can thus be determined on the basis of (a) price in India, and (b) cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit. The petitioner has, therefore, claimed constructed normal value for the subject country based on the information available for the domestic industry.

Examination by the Authority

15. None of the exporters/producers from the subject country have cooperated with the Authority and responded to the present investigation. Further none of the interested parties have provided any other alternate basis as defined in the Rules on which normal value can be determined. Moreover, the Authority also made efforts to gather required relevant data from World Trade Atlas but could not get information regarding domestic prices of subject goods in the subject country. In view of the above position and considering China as a non market economy, the Authority has determined the normal value in accordance with para 7 of Annexure I of the AD Rules. In absence of sufficient information on record regarding the other methods as are enshrined in para 7 of Annexure I of AD Rules, the Authority has determined the normal value by adopting the method "other reasonable basis". The Authority has therefore constructed the normal value for China PR on the basis of the cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit and considering the international prices of major raw materials. Accordingly, the constructed normal value for Chinese exporters has been determined as US\$ *** per Kg.

F.2. EXPORT PRICE

16. With regard to export price, the Authority observed that none of the exporters from the subject country has cooperated .Therefore, the Authority has considered weighted average CIF price as per IBIS import data since the same reports substantially higher volume of imports as compared to DGCI&S data. The weighted average CIF price of

imports from China, as per IBIS data for the POI, comes to US\$ *** per Kg. In the absence of response from producer/exporter from the subject country, the following adjustments amounting to USD *** have been made to arrive at the net export price: -

- (a) Ocean freight @ US\$ *** pmt
- (b) Marine insurance @ *** of CIF value
- (c) Commission @ *** of FOB value
- (d) Port expenses @ *** % of FOB value
- (e) Inland freight @ *** % of FOB value
- (f) Chinese VAT @ *** % of FOB value

Based on the above data the net ex-works export price of the exports from China PR to India is determined as Rs *** per Kg (USD *** /Kg).

F.3. Dumping Margin

17. The ex-works constructed normal value has been compared with the net ex-works export price to determine the dumping margin, which works out as follows:

Particulars	Unit	On CNV basis
Normal value	US \$./kg	***
Net Export price	US \$./kg	***
Dumping margin amount US \$	US \$./kg	***
Dumping margin	%	***
Dumping margin	Range of %	20-30

18. The Dumping Margin from the subject country is not only above de-minimis but also substantial.

G. Likelihood of continuation or recurrence of dumping from China

Submissions of the Domestic Industry

19. Following submission have been made by the Domestic industry with regard to likelihood of continuation or recurrence of dumping from China:

- a) In the present case, the exporters and producers of China PR continued to export the material at dumped prices even after imposition of the dumping duty. In the present case the dumping margin is not only the de minimis but also substantial. There is continued dumping from the producers and exporters from China PR, which would become more aggressive once the duty in force expires.

b) The Designated Authority had earlier found at the time of original investigation that the product under consideration is being exported from China at dumped prices and the same has caused material injury to the domestic industry. There is no material difference in the circumstances that prevailed at the time of original investigation and at present. In fact, the product continues to be exported at dumped prices and has been exported to India throughout the current injury period at dumping prices as would be seen from the calculations of dumping margin for the current injury period.

c) Pyrazolone import prices increased during 2008-09 and have declined thereafter. Table enclosed with these submissions shows the CIF import price of the product under consideration from China. It would be seen that the import prices increased during Oct.-Nov., 2008 but once again declined thereafter. The current prices are in the region or below the prices prevailing in 2006-2007.

d) Easter, Sodium Sulphite and Aniline are the major raw materials required for production of the product under consideration. While the prices of Easter (the single largest raw material) and Aniline (the second largest raw material) have shown significant increase, the prices of the product under consideration have not increased in proportion to the increase in costs on account of these major raw materials.

e) The product under consideration is one of the rare products where the production and consumption are largely in China and in India only. In fact, the product under consideration is consumed only in India and China. Moreover the producers in china have substantial production capacity with export orientation. Therefore cessation of anti-dumping duty is likely to have significant adverse impact on the domestic industry.

f) The share of China in imports into India and consumption in India continues to be significant, even though the same has shown some declining trend in the recent years. It is the understanding of the petitioner that some imports are being made under duty exemption scheme. Since Govt. of India has provided exemption from payment of anti-dumping duty in respect of imports for exports, no anti-dumping duty applies on these imports and therefore the imports are cheaper than domestic industry prices. Since imports are cheaper, the domestic industry cannot afford to match the price even after taking into account the deemed export benefits and therefore the domestic industry is not in a position to supply to segment even on deemed export basis. Thus, this demand continues to be made through imports. Barring such imports, the imports appear to have been made only in those situations where the landed price of imports after adding prevailing anti-dumping duties are lower than the domestic industry prices. This gets readily established if the import data is examined on transaction by transaction basis.

Examination By the Authority

20. The Authority notes that there is no response from the producers/exporters of the subject goods from the subject country. However basing on information provided by the domestic industry and other available information the Authority notes that the Chinese producers have substantial production capacity. Considering the substantial increase in demand in the Indian market during the period of investigation and considering continued dumping of the subject goods despite the anti-dumping duty in force, the Authority notes that cessation of the extant duty may result in intensified dumping.

21. Based on the information submitted by the domestic industry the Authority notes that while only one company in China namely M/s Jiangsu Changyu Chemical Co. Ltd. has about 3600 MT/ annum production capacity of subject goods, demand in India is only 898 MT per annum. Therefore, the Authority is of the view that since capacity of only one company in China PR far exceeds total demand in India, in such a situation cessation of existing anti dumping duty would lead to intensification of dumping of the subject goods from the subject country and injury to the domestic industry.

H. INJURY AND CAUSAL LINK DETERMINATION

Submissions of the Domestic Industry

22. Following submission have been made by the Domestic industry with regard to injury and causal link.

- The volume of imports from the subject country remained high in spite of the antidumping duty in force.
- The imports from the subject country are undercutting the prices of the domestic industry in the market. The landed price of imports is significantly below the cost of production of the domestic industry leading to depressing effect on the prices of the domestic industry in the market.
- The dumping margin from the subject country is not only more than de-minimis but also significant.
- There are significant inventories still lying with the domestic industry.
- The improvement shown by the domestic industry in various parameters is the result of the anti dumping measures in existence. Once the existing duty is revoked, there is a strong possibility of recurrence of injury to the domestic industry from subject country.
- Given the significant price undercutting without anti dumping duty and the price depressing effect of revocation of anti dumping duties, it follows that the profits, return on investment and cash profits would suffer significantly in the event of cessation of anti dumping duties.

Examination by the Authority

23. The Authority has considered various arguments put forth by domestic industry in their submissions and issue of continuation of injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority. The Authority proposes to conclude that the current dumping margins from the subject country are above de-minimus level. The Authority therefore proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject country.

24. According to Section 9(A)(5) of the Customs Tariff Act, anti dumping duty imposed shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition, provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension.

25. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped

imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

26. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states as follows.

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping, actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

27. For the purpose of current injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject country on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. Accordingly, the volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

(A) VOLUME EFFECT:

28. Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry have been examined as follows:

I. Demand and Market shares

29. The Authority has determined demand or apparent consumption of the product in the Country as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed can be seen in the table below.

Demand	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Sales of Domestic Industry	MT	511	517	580	792
Imports - Subject	MT	116.98	217.60	119.45	106.60

Country						
Imports - Other Countries	MT	0.02	1.16	0.20	-	
Demand	MT	628.00	735.76	699.65	898.60	
Market Share in Demand						
Sales of Domestic Industry	%	81.37	70.27	82.90	88.14	
Subject country-Imports	%	18.63	29.57	17.07	11.86	
Other Countries-Imports	%	0.00	0.16	0.03	-	
Total	%	100	100	100	100	

30. Authority

notes that demand of the subject goods in country shows a positive trend across injury period with a marginal decline in 2008-09, but substantial increase in period of investigation as compared to previous year. Sales of the domestic industry have shown improvement commensurating to increase in demand and in the presence of anti dumping duty on dumped imports being in force. On the same line share of domestic Industry in demand has also increased during period of investigation as compared to base year as well as previous year.

II. Import Volume & market share

31. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Imports					
China	MT	116.98	217.60	119.45	106.60
Other Countries	MT	0.02	1.16	0.20	-

Total Imports	MT	117.00	218.76	119.65	106.60
Market Share in Imports					
Subject country	%	99.98	99.47	99.83	100.00
Other Countries	%	0.02	0.53	0.17	-
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00

32. Authority notes that volume of dumped imports from subject country has marginally declined during POI as compared to proceeding years as well as base year however the volume of the same remained significant commanding 12% of the total demand. Import from other countries is de-minimus.

III. Production, capacity and capacity utilization

33. The table given below gives an overview of the installed capacity and production of the domestic industry over injury period through POI.

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI
capacity	MT	925	925	925	925
Production	MT	542	519	616	795
Capacity utilization	%	58.59%	56.11%	66.59%	85.95%

34. The Authority observes that Production and capacity utilization of the domestic industry has increased over the injury period. Moreover, by using the same plant and machinery other products are also being produced by the domestic industry. Keeping in view the above position, Authority notes that capacity utilization of domestic industry improved over the injury period.

IV. Sales:

35. Sales volumes of domestic industry are given in the following table:-

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI
Domestic sales	MT	511	517	580	792
Indexed	Index	100.00	106.12	120.58	163.69

36. The sales volume of the domestic industry shows a positive trend. However the sales of the domestic industry fall short of domestic demand despite having capacity to meet the same.

IV. Market Share

37. Share of the domestic industry and various other parties in demand in India was as under:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Demand	MT	628	736	700	899
Share in demand					
China	%	18.63	29.57	17.07	11.86
Other Countries	%	0.00	0.16	0.03	-
Domestic industry	%	81.37	70.27	82.90	88.14

38. The imports from China continue to hold significant share in the Indian market though declined in the POI. The share of domestic Industry in domestic demand has also increased during period of investigation. However the domestic industry has fallen short of fulfilling the entire demand in the domestic market despite having the required capacity and the protection of existing anti-dumping measures.

(B) Price Effect of the dumped imports on the Domestic Industry

39.

In order to ascertain the price effect of the imports of the subject goods from the subject countries on the domestic industry, the Authority has examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In order to assess the extent of price undercutting, the Authority has compared net sales realization of the domestic industry with the landed price of imports. The net sales realization was arrived, after deducting all rebates and taxes. The landed value of imports was compared with net sales realization of the domestic industry, even after considering the anti-dumping measure in force.

I. Price Undercutting:

Net Sales Realisation(Rs/kg)	Landed price(Rs/Kg)		Price Undercutting(Rs/Kg)		Price Undercutting%		Price Undercutting Range %	
	Without ADD	With ADD	Without ADD	With ADD	Without ADD	With ADD	Without ADD	With ADD
***	***	***	***	***	***	***	***	15-20 - 5 to - 10

40. The Authority notes from the above table that the price undercutting without duty is positive and substantial. However price undercutting with duty is negative signifying the effect of existing anti-dumping measures on dumping of subject goods from subject country. Nevertheless Authority notes that cessation of duty may result in positive price undercutting.

II. Price Underselling:

Non Injurious Price(Rs/kg)	Landed price(Rs/Kg)		Price Underselling (Rs/Kg)		Price Underselling%		Price Underselling Range %	
	Without ADD	With ADD	Without ADD	With ADD	Without ADD	With ADD	Without ADD	With ADD
***	***	***	***	***	***	***	10-20	-10 to -20

41. From above table Authority notes that landed price without anti-dumping duty is below non injurious price of the domestic industry.

III. Price suppression and depression effects of the dumped imports:

42. In order to assess whether the imports from subject countries were suppressing/depressing the prices of the domestic industry, the Authority has compared the cost of production and net selling price of the domestic industry along with the landed price of imports over the injury period, which is given in the following table:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10 (POI)
Cost of Production	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	101	118	100
Net Selling price	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	97	116	102
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	(57)	44	164
Landed price from subject country(With ADD)	Rs/Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	88	135	97

43. From the above table, it is evident that the cost of production during the POI has declined compared to the previous year and remained at the level of base year. The net selling price also declined during the POI as compared to the previous year and marginally increased over the base year. The Authority notes that the trend in the behavior of movement in the cost of sales and the selling price is similar and does not signify any price suppression/ depression effect.

Examination of other Injury Parameters

44. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

I. Profit/loss, Return on Investment and Cash Flow –

45. The return on investment, profit/loss before and after interest, return on investment and cash profit are shown in the table below:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Cost of production	Rs. /Kg	***	***	***	***
Selling price	Rs. /Kg	***	***	***	***
Profit/loss	Rs. /Kg	***	***	***	***
Profit before Interest	Rs.Lacs	***	***	***	***
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	(18)	80	271
ROCE	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	(48)	35	157

46. It is noted that the cost of production increased up to 2008-09 and then declined in the POI to level of the base year. The selling price also increased in 2008-09 and then declined in the POI. It seems that domestic industry has started making profits after imposition of anti dumping duty.

II. Inventories:

47. Inventories with the domestic industry have been as under:

	2006-07	2007-08	2008-09	POI
Average stock	***	***	***	***
Indexed	100	86	200	293

48. It is noted that average inventory of the domestic industry has increased over the injury period. Despite increase in demand and increase in production, the Domestic Industry is unable to liquidate its production which has resulted in increase of stocks.

III. Employment, wages and productivity

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI
Employment	Nos.	***	***	***	***
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Productivity per employee	Rs./MT	***	***	***	***

49. It is observed that the employment level of the domestic industry shows a decline in the period of investigation as compared to the previous year and remains at the level of base year. Salary & wages paid by the domestic industry increased. The wages and productivity per employee have increased during POI as compared to the previous year.

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI
Productivity per day	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	95.75	113.69	146.84
Productivity per Employee	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	86.48	93.62	146.84

50. The Authority notes that productivity has moved in tandem with production and employment.

IV. Profitability:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
Cost of Sales	Rs. /Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	100.77	117.66	100.00
Selling price	Rs. /Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	96.69	115.76	101.65
Profit/loss	Rs. /Kg	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	(57.14)	44.48	164.20
Profit before Interest	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	47.20	94.91	188.09
PBIT on domestic sales	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100.00	(18.21)	79.13	270.90

51. The authority notes the performance of the domestic industry has improved over the injury period and the domestic industry is in profits.

V. Growth

52. The domestic industry has started registering positive growth. The Authority notes that the health of the domestic industry has improved in terms of production, productivity, Capacity utilization, domestic sales, cash profit, profitability and return on investment. However, the growth and improvement in the health of domestic industry is due to the existing anti dumping measures. Although the volume of imports of the subject goods from the subject country has marginally declined during POI as compared to the previous year and the base year, the Authority notes that the market share of the subject country in domestic consumption continued to be significant and imports are at dumped prices. Revocation of anti dumping duty at this stage will lead to intensification of dumped imports and injury to the domestic industry.

VI. Magnitude of margin of dumping

53. The Authority notes that the dumping margin determined is not only above de-minimis level but also substantial.

VII. Ability to raise capital investments –

54. The Authority notes that the firms constituting domestic industry are multi product firms. Their ability to raise further investment is not a significant factor in this case. However, should the dumping from the present sources persist, ability of the domestic industry to raise capital would suffer.

I. Magnitude of injury and injury margin

55. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin during the POI. Thus compared, the injury margin is worked out as under:

Particulars	Rs./kg
Non -Injurious Price(NIP)	***
Landed Price (Without ADD)	***
Injury margin	***
Injury margin (%)	***
Injury margin range (%)	10-20

The Authority notes that the injury margin is not only positive but also substantial.

J. Likelihood of continuation or recurrence of injury

56. Following submissions have been made by the Domestic industry with regard to likelihood of continuation or recurrence of injury.

a) China is exporting above 10,000 MT of compounds containing infused Pyrazolone. Pyrazolone is one of the raw materials required for manufacturing this compound. Significant

exports of Pyrazolone compound clearly establish significant production of Pyrazolone in China.

- b) Existence of significant production of Pyrazolone in China clearly establishes likelihood of export of Pyrazolone, including the product under consideration, as the producers would be in a position to export the product if they get a better price instead of converting it into compound or selling in the domestic market to other consumers for convert it into compound.
- c) The rules provide for consideration of “freely disposable production capacities” in the exporting country. Freely disposable production capacities have to be seen as the capacities available with the Chinese producers which can be used for deciding sales in different markets. There is no claim by Chinese producers nor any publicly available information that Pyrazolone capacities are dedicated/frozen to certain markets and are not available for diverting to Indian market.
- d) The increase in imports volumes of the product under consideration in 2007-2008 (which is twice the import volumes in the current period of investigation) clearly establishes the freely disposable production capacity with the Chinese producers.
- e) It would also be seen from the final finding of the original investigation that imports of the product under consideration from China increased from below 20 MT (2000-2001), above 100 MT (2001-02) and further to 280 MT in that investigation period. The imports thus increased 14 times in that period as compared to base year of that case. This further establishes existence of significant freely disposable production capacities in China.
- f) The circumstances with the Chinese producers, which were prevalent at the time of original investigations, are very much in existence even till date. There has been no change in the circumstance, which could suggest that the dumping would not recur at the aggravated level at which it was at the time of original investigation.
- g) Considering the huge production capacities of the subject goods in subject country and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood any reduction or revocation of the anti-dumping duty may lead to spurt in the dumped imports injuring the domestic industries.
- h) Positive price undercutting and underselling without considering the anti-dumping duties in force indicate the likely adverse price effect of dumped imports on Domestic Industry in the event of expiry of the anti dumping duty in force.
 - i) Despite improvement in various economic parameters, the domestic industry is likely to suffer adverse price effect in the event of revocation of anti dumping duties.
 - j) Given significant capacities available in China, the Chinese producers are likely to take away complete domestic industry's market in the event of revocation of anti dumping duties.
 - k) There is continued dumping from the producers and exporters from China PR, which would become more aggressive once the duty in force expires as is evident from the dumping margin calculated by the petitioner over the injury period.

Examination by the Authority

57. The Authority notes that imports of product under consideration from the subject country remained significant over the current injury period in absolute terms. The imports of the subject goods from the subject country continued to be at dumped prices in spite of existing anti dumping duties. With regard to price effect, it is observed that imports were significantly undercutting and underselling the prices of the domestic industry without

the Anti dumping duty although, with duty the price undercutting and price underselling effect is negative. Although the analysis of various economic parameters show that the overall economic health of the domestic has improved, the Authority observes that such improvement is on account of the anti-dumping measures in force. In view of the above position the Authority concludes that in the event of cessation of the anti dumping measures the dumping of subject goods from subject country is likely to be intensified and will adversely affect the domestic industry.

K. Other Known factors and Causal Link:

58. The Authority has examined the significance and relevance of causal link in a sunset review investigation. It is important to note under Section 9A(5), the Authority is required to examine the likelihood of dumping and injury and the need for continuation of duties irrespective of whether there have been any imports of the product under consideration during the review investigation period or not. It was examined whether other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It is noted as follows:

(a) **Volume and prices from other countries**

59. There is no import of the subject goods from the other country during POI. The imports of subject goods from other countries during injury period is very negligible and therefore cannot have any adverse effect on the domestic industry.

(b) **Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers**

60. The Authority notes that the subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Further, the landed price of imports declined significantly during POI. In a situation where the import prices are substantially lower than the selling prices of the Indian Producers, it cannot be concluded that the price reduction in the market were triggered by the domestic producers.

(c) **Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption**

61. There is no contraction in the overall demand during the period under consideration. Rather the domestic demand has consistently increased over the injury period. Therefore, any possible decline in demand is not a factor, which could have caused injury to the domestic industry. There is no argument by interested parties regarding the change in the pattern of consumption, nor does it appear that changes in the pattern of consumption could have inflicted the injury to the domestic industry.

(d) **Development of Technology:**

62. The Authority notes that due to non cooperation by the producers/exporters of the subject goods from the subject country the difference in technology, if any, could not be ascertained. However, there is no development in technology that could have impacted

the performances of the domestic industry *vaz-a-viz* producers/exporters from the subject country.

(e) Export performances:

63. The export of subject goods by the domestic industry is negligible. However, the injury analysis has been done without including export performances of the domestic industry.

L. Indian industry's interest & other issues

64. The Authority recognizes that imposition of anti-dumping duties might affect the price level of product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantage gained by dumping practices, would arrest the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. Consumers could still maintain two or even more sources of supply.

65. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

M. Conclusions:

66. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of continuation of dumping and consequent injury and likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i. The subject goods are entering the Indian market from the subject country at dumped prices and dumping margin is above the prescribed de-minimis limits and significant.
- ii. The subject goods continue to be exported to India at dumped prices in spite of the existing anti-dumping duties.
- iii. Although, the overall economic parameter and health of the domestic industry has improved due to the existing anti-dumping duties, without the existing anti-dumping duties the price undercutting and price underselling are significant from the subject country. Hence, injury to the domestic industry is likely to recur, in case the present anti-dumping duties are allowed to expire.

iv. The Authority notes that imports of product under consideration from the subject country remained significant over the current injury period in absolute terms. The imports of the subject goods from the subject country continued to be at dumped prices in spite of existing anti dumping duties. With regard to price effect, it is observed that imports were significantly undercutting and underselling the prices of the domestic industry without the Anti dumping duty although, with duty the price undercutting and price underselling effect is negative. Although the analysis of various economic parameters show that the overall economic health of the domestic has improved, the Authority observes that such improvement is on account of the anti-dumping measures in force. In view of the above position the Authority concludes that in the event of cessation of the anti dumping measures the dumping of subject goods from subject country is likely to be intensified and will adversely affect the domestic industry.

v. Based on the information submitted by the domestic industry the Authority notes that while only one company in China namely M/s Jiangsu Changyu Chemical Co. Ltd. has about 3600 MT/ annum production capacity of subject goods, demand in India is only 898 MT per annum. Therefore, the Authority concludes that since capacity of only one company in China PR far exceeds total demand in India, in such a situation cessation of existing anti dumping duty would lead to intensification of dumping of the subject goods from the subject country and injury to the domestic industry.

vi. Authority also takes note of the fact that none of the producers/ exporters/importers have responded to the subject investigation which suggests that they are intentionally not participating in the investigation and continue to dump the subject goods in India.

N. Recommendations

67. Having concluded as above, the Authority is of the opinion that the anti-dumping measure is required to be extended and the quantum of the anti-dumping duty is required to be modified in respect of the imports of the subject goods from the subject country as specified in the duty table below.

68. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duties equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, antidumping duty as per amount specified in Col 8 of the table below is recommended to be imposed in the event of acceptance of these recommendations by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject country as mentioned herein below.

DUTY TABLE

Sl. No	Heading/ Subheadin g	Description of goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty amou nt	Unit	Currency
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.
1.	293319, 291634, 291739, 292429, 293311, 293359, 294200, 980200	1-Phenyl-3- Methyl-5- Pyrazolone	China PR	China PR	Any	Any	0.52	KG	US\$
2.	-DO-	1-Phenyl-3- Methyl-5- Pyrazolone	China PR	Any	Any	Any	0.52	KG	US\$
3.	-DO-	1-Phenyl-3- Methyl-5- Pyrazolone	Any Country other than China PR	China PR	Any	Any	0.52	KG	US\$

O. Further Procedures

69. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs Authority under the Customs Act, 1962 and all duties of Customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

70. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority